ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 13 | कुल पृष्ठ-8 | 02 से 08 मई, 2024 | दयानन्दाब्द 199 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 | सम्वत् 2080 | वै. कृ.-09

आर्य समाज मितरौल, औरंगाबाद, जिला–पलवल (हरियाणा) का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया

आर्य समाज को सप्तक्रांति के मुद्दों पर कार्य करना चाहिए – स्वामी आर्यवेश

वेद प्रचार की योजना बनाने के लिए शीघ्र ही कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाया जायेगा – राजदेव नैष्ठिक

पांच दशक से आर्य समाज के प्रचार के लिए कार्य कर रहा हूँ – सहदेव बेधड़क

आर्य समाज मितरौल, औरंगाबाद, जिला–पलवल, हरियाणा का वार्षिकोत्सव 26, 27 व 28 अप्रैल, 2024 की तिथियों में समारोह पूर्वक धूमधाम के साथ मनाया गया। उत्सव में आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, वैदिक कथावाचक श्री देशराज आर्य जी, भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के अध्यक्ष श्री सहदेव बेधड़क जी, हरियाणा के वेद प्रचार अधिष्ठाता ब्र. राजदेव नैष्ठिक आदि के अतिरिक्त क्षेत्र के अनेक गणमान्य आर्यजनों ने भाग लिया।

स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज की स्थापना के 150वें वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए आर्यों का आह्वान किया कि वे सप्तक्रांति के कार्यक्रम को प्रमुखता देकर कार्य करें। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सामाजिक क्रांति की दिशा में निर्देश दिया था कि आर्य समाज जातिवाद मुक्त, साम्प्रदायिकतामुक्त, भ्रष्टाचारमुक्त, नशामुक्त, धार्मिक अन्धविश्वास व पाखण्डमुक्त, नारी उत्पीड़न मुक्त एवं शोषण मुक्त समाज का निर्माण करने के लिए सप्ताक्रांति अभियान चलाये। सप्तक्रांति के इन प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि जब तक समाज में जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता जैसी संकीर्णता रहेगी तब तक समाज उन्नति नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार, नशा, धार्मिक अन्धविश्वास तथा पाखण्ड को मिटाना वर्तमान की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। इसी प्रकार समाज में नारी जाति के गौरव एवं सम्मान की रक्षा के लिए तथा आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए आर्य समाज को आगे आना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने इस बात पर भी विशेष बल दिया कि वर्तमान समय में आर्य समाज के कर्णधारों को वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा एवं आर्य समाज के संगठन की सुरक्षा के लिए संकल्पबद्ध होना होगा। प्रायः देखने में आता है कि आर्य समाज के प्रतिष्ठित नेता एवं विद्वान् भी कई बार सिद्धान्तों के साथ समझौता कर लेते हैं जिसकी वजह से संगठन को आलोचना झेलनी पड़ती है। आर्य समाज की अपनी एक पहचान एवं प्रतिष्ठा रही है कि आर्य समाजी व्यक्ति कभी सिद्धान्तों को लेकर समझौता नहीं करता, बल्कि उसके लिए बड़े से बड़ा त्याग करना पड़े तो उसके लिए भी तैयार रहता है। अतः यह आवश्यक है कि आर्य समाज के सभी पदाधिकारियों, विद्वानों, नेताओं तथा कार्यकर्ताओं को वर्तमान में अत्यन्त सजग एवं सावधान रहने की आवश्यकता है। विभिन्न स्तर पर संगठन में स्वार्थी एवं सिद्धान्तहीन लोगों द्वारा घुसपैठ की जा रही है जो एक चिन्ता का विषय है। स्वामी आर्यवेश जी ने हरियाणा प्रान्त के प्रत्येक गांव में आर्य समाज का संगठन बनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हरियाणा एक छोटा प्रदेश है और यहां आर्य समाज का प्रारम्भ से ही विशेष प्रभाव रहा है। अतः गांव–गांव में आर्य समाज की इकाईयाँ बनानी चाहिए ताकि आर्य समाज और अधिक मजबूत बन सके।

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी आर्यवेश जी के विचारों से सहमति जताई। उन्होंने बताया कि मैं लगभग 56 वर्ष से आर्य समाज के प्रचार में जुटा हुआ हूँ। उनके दादा स्व. चौ. पृथ्वी सिंह बेधड़क ने अपनी विरासत मेरे कंधों पर रखी थी जिसे मैं पूरी निष्ठा के साथ संभाल रहा हूँ और आगे बढ़ा रहा हूँ।

हरियाणा के वेद प्रचार अधिष्ठा ब्र. राजदेव नैष्ठिक ने घोषणा की कि वे शीघ्र ही कार्यकर्ताओं का सम्मेलन आयोजित करेंगे और गांव–गांव में वेद प्रचार अभियान चलाया जायेगा। इस अभियान के दौरान गांव में आर्य समाजों की स्थापना भी की जायेगी।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में श्री देशराज आर्य के प्रवचनों एवं श्री सहदेव बेधड़क तथा श्री तेजवीर आर्य के भजनों का कार्यक्रम चलता रहा। कार्यक्रम का संयोजन श्री डालचन्द आर्य ने किया। इस अवसर पर वेद प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष श्री नारायण सिंह आर्य, श्री अशोक आर्य, महाशय श्रीचन्द आर्य, श्री दुलीचन्द आर्य आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। आर्य समाज के प्रधान श्री चरण सिंह पहलवान, श्री ठाकुर लाल आर्य, मा. शिव सिंह आर्य आदि ने उत्सव की व्यवस्था को बड़ी कुशलता के साथ संभाला। कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

9 मई जयन्ती पर विशेष

देश भक्ति के प्रेरणा स्रोत - महाराणा प्रताप

- उदयप्रताप सिंह चौहान

स्वतन्त्रता की प्रथम ज्योति प्रज्ज्वलित करके भारत के गौरवशाली, अतीत की रक्षा के लिए एवं देशवासियों को दासता के जीवन से छुटकारा दिलाकर स्वाभिमान के लिए मर मिटने का पाठ पढ़ाने वाला स्वतन्त्रता देवी का अनन्यभक्त महाराणा प्रताप जिसने कहा था कि 'परतन्त्र बनकर महलों का निवास, चांदी के पात्रों में भोजन करने से, कहीं अच्छा है जंगलों में भूमि शयन, और फूल फल पादपों और घास की रोटियां, जिनमें स्वतन्त्रता की सुगन्ध तो विद्यमान है।'

इसी महान स्वतन्त्र दीप से प्रकाशित हुआ छत्रपति शिवाजी का अन्तःकरण और अपने जीवन भर मराठा राज्य के लिए लड़ती रही महान वीरांगना झांसी की रानी ने भी इसी इतिहास को पढ़कर जीवन के अन्तिम क्षणों तक ब्रिटिश हुकूमत से युद्ध किया और ब्रिटिश सरकार के जोर जुल्म के समक्ष आत्मसमर्पण नहीं किया। इसी प्रेरणा से ही प्रेरित होकर वर्तमान स्वतन्त्रता के प्रणेता के रूप में सर्वप्रथम श्री खुदीरामबोस ने देश की बलिवेदी का नमन किया, फिर असंख्य देशभक्तों ने इस स्वतन्त्रता की वेदी पर अपने को बलिदान करते हुए कहा कि 'सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुएं कातिल में हैं।' इस पंक्ति में रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, सरदार भगतसिंह, सुभाषचन्द्र बोस आदि खड़े हैं। हम विस्मृत नहीं कर सकते बहादुरशाह जफर को जिसके शब्द थे कि 'बागियों में जब तलक ताकत है एक ईमान की, तख्त लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दोस्तान की।'

ये सब स्वतन्त्रता प्रेमी महाराणा प्रताप की प्रेरणा से ही प्रेरित थे। उक्त अमर शहीद जिनकी कुर्वानियों ने ब्रिटिश सिंहासन को हिला दिया, अंग्रेजी हुकुमरानों के दिल दहल गये और उनको भारत स्वतन्त्र करने केलिए विवश होना पड़ा हम लकीर के फकीर बनकर भले ही कहते रहे कि किसी व्यक्ति विशेष की कृपा से हमें स्वतन्त्रता देवी के दर्शन हुए हैं। परन्तु यह तथ्य सर्वमान्य नहीं है।

'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' इसी उक्ति के प्रेरणा स्रोत थे महाराणा प्रताप। इस बात से कदापि इन्कार नहीं किया जा सकता कि स्वतन्त्रता की भावना जाग्रत करने का श्रेय 'राणा' को ही जाता है जिन्होंने विदेशी मुगलियां शासन के विरुद्ध स्वतन्त्रता का पहला बिगुल बजाया था। आज हम और देश के नेता उस महान सेनानी को स्वतन्त्रता सेनानियों की उस पंक्ति में इसलिए नहीं खड़ा करना चाहते हैं कि कहीं हमारा मुस्लिम वोट बैंक अन्यत्र न खिसक जाये। परन्तु उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि 'हल्दीघाटी' का वह युद्ध उसी प्रकार से विदेशी शासन के विरुद्ध था जिस प्रकार भारत का स्वतन्त्रता संग्राम। 'हल्दी घाटी' का युद्ध किसी जाति अथवा वर्ग विशेष के विरुद्ध न होकर एक विदेशी हुकूमत के विरुद्ध था और उस प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का नायक था 'प्रणवीर, राणा प्रताप'। उस महान स्वतन्त्रता सेनानी की सेवाओं को यदि हमने तुष्टीकरण की आग में झोंक दिया तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा। क्योंकि हल्दी घाटी और यह स्वतन्त्रता संग्राम दोनों विदेशी सत्ता के विरुद्ध हुए चाहे वह मुगलियां हुकूमत हो अथवा अंग्रेजी सत्ता इस प्रकार से यह निर्विवाद सत्य है कि राणा प्रताप ही इस देश के प्रथम स्वतन्त्रता के प्रेरणा श्रोत थे।

हिन्दुओं की दशा अकबर की नीति (कवित छन्द) गौर गुमान, मान दे चुके थे कौड़ियों में, हिन्दुओं की एकता का छिन्न भिन्न तार था। किए गुलाम इस्लाम की लगाम लगा, इसका अगाड़ी कुछ और ही विचार था। हो न सकी पूर्ण अभिलाषा परिभाषा क्योंकि जीवन में बाधक हमेशा एक खार था।

'अकबर' यदि बेलगाम का तुरंग था तो, चढ़ने को राणा बेलगाम का सवार था।

राणा ने भारत की सोयी हुई हिन्दू जाति को उस समय

जगाया था जब हम परतन्त्रता के गर्त में गिर चुके थे, हमारा गौरव दिशाहीन होकर नष्ट हो रहा था।

प्रताप पराक्रम (हल्दीघाटी)

चीघते थे हाथी हय हींसते थे बारबार
बैरियों में हल्ला सुन रल्ला मच जाता था
कट-कट रूण्ड, मुण्ड-झुण्ड झक मारते थे
झट्ट-पट्ट वीरता का झण्डा गड़ जाता था।
हेकड़ों की हेकड़ी दबा के दुम भागती थी
मुगलों का सारा मदमान झड़ जाता था
लेकर स्वतन्त्रता की तेज तलवार जब,
प्रणवीर प्रबल प्रताप अड़ जाता था।

उस महान स्वतन्त्रता प्रेमी ने हल्दी घाटी के युद्ध में जो पराक्रम दिखाया वह स्मरणीय एवं वन्दनीय तथा अभिनन्दीय है।

स्वतन्त्रता संग्राम जो हल्दी घाटी के युद्ध के रूप में लड़ा गया उसको केवल इस भय से हम स्वतन्त्रता संग्राम नहीं कहना चाहते हैं कि कहीं वह भी बाबरी मस्जिद न बन जाए और लोग एक बहाना लेकर राजनीति की रोटियां न सेंकने लगे। परन्तु उस शासक श्रेणी के मुगलों और आज के मुसलमानों में अन्तर का अनुभव नहीं करते। आज का मुसलमान और स्वतन्त्रता संग्राम का मुसलमान भारतीय और भारत का नागरिक है, शासक नहीं है।

हमने तमाम जन्म दिन और जयन्तियों की घोषणा सार्वजनिक कर डाली परन्तु उस स्वतन्त्रता के प्रथम दीप के जयन्ती की घोषणा सार्वजनिक रूप में करने में हमें भय है, करना भी चाहते हैं तो तुष्टिकरण हेतु हमारे ही नेता अगुस्तनुमाई के लिए तैयार है हम हिन्दू, हिन्दी हिन्दुस्तान का स्वप्न देखते हैं। भाषणों से जनता को मकड़जाल मेंफंसाते हैं परन्तु हिन्दू, हिन्दी, हिन्द, हिन्दू की नाक बचाने वाले उस वीर को भूल बैठे हैं यदि सरकार इसमें पहल नहीं करती तो देश प्रेमी जनता को इस जयन्ती को सार्वजनिक रूप में मनाने के लिए सरकार को विवश करना चाहिए। उस विभूति ने महल, अटारी, राजपाट, स्वर्णपात्र छोड़कर सपरिवार जंगलों में रहकर घास फूस की रोटियां, फल पत्र खाकर दिन बिताये थे और प्रतिज्ञा की थी कि जब तक देश को स्वतन्त्र नहीं कर लूंगा भीलों की तरह जीवन बिताऊँगा। उस महान देशभक्त की प्रतिज्ञा की कुछ पंक्तियों पर आप दृष्टिपात करें:-

प्रताप-प्रतिज्ञा

जंगलों में घूमूंगा, पहाड़ों पै करूँगा वास,
जीवन की घाटियों में ऊधम मचाऊँगा।
खाने को भोजन नसीब यदि होगा नहीं,
पादपों के फूल पत्र बीन-बीन खाऊँगा।
हाथ में रहेगा हथियार यदि न कोई तो
खाली नखों से शत्रु आसन डिगाऊँगा।
भूखे प्राण त्याग दूंगा, बस्ती छोड़ दूंगा
और हस्ती मेंट दूंगा, परशीश न
झुकाऊँगा।।

चाहे भील वीरभारी बाँकुरे लड़ाकू,
रणक्षेत्र में दिखाएं पीठ जीवन ये ख्वार
हो।
इष्ट मित्र, बन्धु भाईसारा परिवार चाहे,
कुन्नत बजाये अल्लाह अकबर प्यार हो।
रोटी बेटी चोटी चाहे खोटीपड़ जाये सबकी,
दिन दूंना इस्लाम धर्म का प्रचार हो।
विश्व की विभूति सारी शक्तियां हो एक ओर,
एक ओर चेतक और मेरी तलवार हो।

आज का नेतृत्व तो केवल कुर्सी की लड़ाई में संलग्न है।इनसे देश का भला कैसे सम्भव है। आज का नेतृत्व पूंजीवादी बनने में लगा है। देश कल्याण जन सेवा तो केवल चुनाव के समय की बात रह गयी है लेकिन याद रहे उन्हें इतिहास और भावी युवक माफ नहीं करेगा जो जातिवाद और वर्गवाद से देश में जहर घोल रहे है।।

अन्त में इस अवसर पर मैं उन अमर शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूँ और स्वतन्त्रता के उस ज्योति पुष्प राणा प्रताप को मेरी विशेष श्रद्धांजलि इसलिए कि उस महान सेनानी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति का मार्गदर्शन कराया।

देशभक्ति के प्रेरणास्रोत तुम्हें शत-शत नमन।

- सुखसेनपुर, जनपद कन्नौज (उ. प्र.)

वेदों में प्रतिपादित नारी का आदर्श स्वरूप

– डॉ. शारदा वर्मा

जन्म - सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कन्या के जन्म का। कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि वेदों में तथा अन्य वैदिक साहित्य में भी केवल पुत्र–जन्म की ही कामना की गई है, यहां तक कि दस पुत्र उत्पन्न करने का आदेश दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि पुत्री जन्म की कामना वेद में नहीं की गई है, किन्तु वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। ऐसे प्रसंगों में पुत्र शब्द से पुत्री का भी ग्रहण होता है। इस प्रकार पुत्र और पुत्री दोनों की समानरूप से कामना की गई है। इस विषय में पाणिनि मुनि प्रमाण है। अष्टाध्यायी के एकशेष प्रकरण के **'भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्'** (पा० १।२।६८) सूत्र के आधार पर स्वसा और दुहिता के साथ भ्राता तथा पुत्र का समास करने पर भ्राता और पुत्र ही शेष रहते हैं यथा–भ्राता च स्वसा च=भ्रातरौ, पुत्रश्च दुहिता च=पुत्रौ। इसी प्रकार माता च पिता च इति 'पितरौ' बनता है। इस प्रकार पुत्र शब्द से पुत्र एवं पुत्री दोनों का ही ग्रहण होता है। इसके अतिरिक्त बृहदारण्यकोपनिषद् में तो विस्तार से पुत्र व पुत्री के जन्म के लिए पृथक्–पृथक् औषधियों व खानपान का भी उल्लेख किया गया है।

शिक्षा - वैदिककाल में स्त्री को भी पुरुष के समान ही पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार प्राप्त था। अथर्ववेद ११।५।१८ का मन्त्र सुप्रसिद्ध है–**''ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।''** यहाँ पर विशेष कथनीय यह है कि यहाँ ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ वेदाध्ययन है। अविवाहित रहकर, संयमपूर्वक शारीरिक ब्रह्मचर्य मात्र इसका अर्थ नहीं है। ब्रह्म का अर्थ वेद है–तत् चरति इति ब्रह्मचारी। चर् धातु गति तथा भक्षण अर्थ में है। गति के तीन अर्थ हैं– ज्ञान, गमन तथा प्राप्ति। इसका अर्थ है कि जो ब्रह्म अर्थात् वेद का ज्ञान तथा प्राप्ति करे वह ब्रह्मचारी है। कन्या भी इसी प्रकार ब्रह्मचारिणी होती थी। वह वेद का अध्ययन करती थी। कालान्तर में ब्रह्मचारी शब्द अविवाहित के अर्थ में रूढ़ हो गया। क्योंकि वेदाध्ययनकाल में छात्र–छात्राएँ अविवाहित ही रहते थे। शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों को सम्मानित स्थान प्राप्त था। यहाँ तक कि चरणसंज्ञक वैदिक शिक्षा केन्द्रों में भी वे प्रविष्ट होकर अध्ययन करती थीं। **'जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्'** (पा० ४।१।६३) सूत्र में जातिवाची स्त्री नामों में गोत्र और चरणवाची नामों का ग्रहण सब आचार्यों ने माना है। काशिका में 'कठी' और 'बहवृची' ये उदाहरण दिये गये हैं। कृष्णयजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा का एक चरण कठ था। उसके संस्थापक आचार्य कठ सुप्रसिद्ध आचार्य वैशम्पायन के अंतेवासी थे। कठ के चरण में विद्याध्ययन करने वाली स्त्रियाँ कठी कहलायीं। इसी प्रकार बृह्वृच नामक ऋग्वेद के चरण में अध्ययन करने वाली ब्रह्मचारिणी कन्या बृहवृची संज्ञा की अधिकारिणी थीं। इससे ज्ञात होता है कि चरणों में जो मान–मर्यादा छात्रों की होती थी। वही छात्राओं के लिए भी थी। मीमांसा और व्याकरण जैसे जटिल विषयों का अध्ययन भी स्त्रियाँ करती थी। इस विषय में पातञ्जल महाभाष्य भी प्रमाण है। महाभाष्य (४।१।१४) में तृतीय वार्तिक की व्याख्या में लिखा है–**आपिशलम् अधीते ब्राह्मणी आपिशला।** इसी प्रकार वार्तिक पाँच की व्याख्या में **'काशकृत्स्निना प्रोक्ता मीमांसा काशकृत्स्नी, तामधीते काशकृत्स्ना'** लिखा है अर्थात् अपिशलि आचार्य से व्याकरण पढ़नेवाली आपिशला तथा काशकृत्स्नि आचार्य से मीमांसा का अध्ययन करने वाली स्त्री का शकृत्स्रा कहलाती थी। इसी प्रकार पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन करनेवाली कन्या पाणिनीया कहलाती थी।

अध्यापन - ऐसे प्रमाण भी स्पष्टरूप में पाये जाते हैं कि विदुषी स्त्रियाँ अध्यापन के क्षेत्र में भी योगदान करती थीं जिसके आधार पर वे उपाध्याया तथा आचार्या जैसे गौरवपूर्ण पदों को भी प्राप्त करती थी। मनु ने साङ्गोपाङ्ग वेद के पढ़ानेवाले को ही आचार्य कहा है।१ इसी का स्त्रीलिङ्ग रूप 'आचार्या' है।

विवाह - विवाह का जो आदर्शस्वरूप वेद में वर्णित है वह अन्यत्र दुर्लभ है। विवाह–संस्कार के समय वर वधू से कहता है–**समापः हृदयानि नौ।** अर्थात् हम दोनों के हृदय जल के समान एक हो जाएँ। जिस प्रकार जल से जल को पृथक् नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार पति और पत्नी को भी पृथक् नहीं किया जा सकता। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हुए वर और वधू का एक वार्तालाप ऋग्वेद (१०।१८३।१२) में दिया गया है। वहां दोनों ओर से एक–दूसरे को युवा–युवति, पुत्रकाम और पुत्रकामा इन शब्दों से सम्बोधित किया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि वेद की सम्मति में उन्हीं स्त्री पुरुषों को विवाहित–जीवन में प्रवेश करना चाहिए जो युवा हो चुके हों।

एकपत्नीत्व - वैदिकधर्म में एक पुरुष की एक ही पत्नी हो सकती है तथा एक स्त्री का एक ही पति हो सकता है। यह नियम जीवनभर के लिए लागू है। अथर्ववेद और ऋग्वेद में विवाह के समय नव वर–वधू को उपदेश दिया है ''कि तुम दोनों पति–पत्नी इस गृहस्थाश्रम की मर्यादा में स्थिर रहो। तुम कभी एक–दूसरे को मत छोड़ो तथा सम्पूर्ण आयु को प्राप्त करो।''

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमार्युव्यश्नुतम्।

– अथर्व० १४।१।२२; ऋग्० १०।८५।४२

अथर्ववेद में वर अपनी वधू को सम्बोधित करके कहता है ''हे पत्नि ! तू मुझ पति के साथ सन्तानवाली हो, तथा सौ वर्ष तक जीवित रहो।'' **मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम्।** (अथर्व० १४।१।५२) कुछ स्त्रियाँ आजीवन कुँवारी रहती थीं। वे बड़ी होने पर वृद्ध कुमारी, जरत्कुमारी कहलाती थी। महाभारत में सुलभा नाम की एक भिक्षुणी का भी उल्लेख आया है।

वेश-भूषा - वेद में स्त्री की वेश–भूषा पर भी प्रकाश डाला गया है जो पैरों तक ढकी हुई होनी चाहिए–**मा ते कश्प्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ** (ऋग्० ८।३३।१९)। आधुनिकता के प्रतीक स्कर्ट आदि जो वस्त्र आज उपलब्ध हो रहे हैं वे वेद को अभिमत नहीं। स्त्री की वेश–भूषा ऐसी हो जिससे उसका शरीर अधनङ्गा न रहकर भली प्रकार आच्छादित रहे। वेद में स्त्री के मुख ढकने का विधान नहीं है अर्थात् परदाप्रथा वेदानुकूल नहीं है।

दहेज - वेद में प्रतीकरूप में सूर्या और सोम के आदर्श विवाह का उल्लेख किया गया है जिसमें दहेज के रूप में वैदिक–ज्ञान का ही प्राधान्य है, किसी प्रकार के धनादि का नहीं। आज दहेज के रूप में धन के प्राधान्य के कारण ही समाज नारकीय स्थिति को प्राप्त हो चुका है। अनेक युवतियाँ इस दानव से त्रस्त होकर आत्महत्याएँ कर रही हैं। स्वाधीन भारत में यह राष्ट्र एवं समाज के नाम पर कलंक है।

विवाह में परस्पर सहमति तथा आकर्षण - वैदिकधर्म में उन्हीं स्त्री–पुरुषों का विवाह–सम्बन्ध हो सकता है जिन्होंने एक–दूसरे को भली प्रकार जान लिया है और देख लिया है। ऋग्वेद के दशवें मण्डल के १८३वें सूक्त में विवाह करने की इच्छावाली वधू अपने भावी पति का सम्बोधन करके कहती है–'हे वर ! मैंने अपने मन–से अच्छी प्रकार तुम्हें जान लिया है तुम बहुत अच्छे ज्ञानी हो और गुरुकुल में तप का, सादगी और संयम का जीवन व्यतीत करके आये हो और तुम्हें सन्तान की कामना है। आइए हम दोनों मिलकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें।'' इसी प्रकार वरवधू से कहता है–''हे वधू ! मैंने तुम्हें अपने मन से जान लिया है तुम उच्च गुणों वाली युवति हो और मुझे चाह रही हो, तुम्हें सन्तान की कामना भी है। आओ हम मिलकर सन्तानोत्पत्ति करें।''

अथर्ववेद (२।३६।५) में वधू से कहा गया है कि 'हे वधू ! तुम ऐश्वर्य की नौका पर चढ़ो और अपने पति को जो कि तुमने स्वयं पसन्द किया है, संसार सागर के परले पार पहुँचा दो।''२ अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि परस्पर सहमति के बिना वर–वधू का विवाह नहीं होना चाहिए।

किन्तु इस विवाह सम्बन्ध में वर–वधू की अभिरुचि के साथ–साथ माता–पिता तथा गुरुजनों की सलाह भी परमावश्यक है यथा–**'मनसा सविता ददात्'** (अथर्व० १४।१।६) के अनुसार–'कन्या को उत्पन्न करनेवाला पिता अपने मन से सारी बातें सोच–समझकर कन्या को पति के हाथ में देता है।' उसी मन्त्र में कहा है **''अश्विनास्तामुभावरा''** अर्थात् वर और कन्या के माता–पिता कन्या और वर को पसन्द करनेवाले बनते हैं। वैदिक विवाह में माता–पिता और समाज की सहमति भी आवश्यक है– विवाह में उपस्थित लोगों को विश्वेदेवा कहा गया है। आज के समान लड़के, लड़की द्वारा की गई Court Marriage वेद को अभिमत नहीं है।

परिवार में स्थिति - विवाहोपरान्त भी स्त्री को गौरवपूर्ण साम्राज्ञी का स्थान दिया गया है। सम्राट् का अर्थ है शासन करनेवाला। उसका स्त्रीलिङ्ग रूप साम्राज्ञी का सामान्यतः अर्थ शासन करनेवाली किया जाता है, किन्तु वेद३ में इसी प्रसङ्ग में अन्य मन्त्रों के द्वारा साम्राज्ञी के स्वरूप को स्पष्ट कर दिया गया है–जिस प्रकार नदी समुद्र में जाकर मिल जाती है, उसका स्वरूप पूरी तरह समुद्र में विलीन हो जाता है, बदले में समुद्र उसे अपना विशालतम स्वरूप प्रदान कर देता है। अब वह नदी नहीं, समुद्र कहलाती है। इसी प्रकार नववधु ससुराल में जाकर मिल जाए। यदि आज भी वेद का यह आदर्श स्वरूप अपना लिया जाए तो आज सामाजिक उत्पीड़न की समस्याएँ उत्पन्न ही न हों। परिवार में स्त्री किसी के आश्रित नहीं है जैसा कि परवर्ती साहित्य में अनेक श्लोक रच कर स्त्री की स्थिति को दयनीय बना दिया गया। यथा–

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने।
पुत्राः रक्षन्ति वार्द्धक्ये न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।।

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि कन्या कुमार अवस्था में विद्याध्ययन के लिए शिक्षणालय में चली गयी है। अतः विद्याध्ययन काल में उसकी रक्षा का प्रश्न ही नहीं है। गृहस्थ जीवन में भी वह स्वयं तेजस्विनी है, परिवार की पोषिका है यहाँ तक कि वह परिवार का आधार है। तभी कहा है जाया इत् अस्तम् (ऋ० ३/५/४) पत्नी ही घर है। **''न गृहं गृहमुच्यते गृहिणी गृहमुच्यते।''**

वेद के अनुसार वह अपने कार्यों के द्वारा प्रशंसित है तथा उसमें अपने पुत्र पुत्रियों को भी अपनी तरह ही साहसी बनाया है। वह घोषणा करती है–

मम पुत्राः शत्रुहणो अथो मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संञ्जया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः।।

ऋ० १०/१५६/३

अर्थात् मेरे पुत्र शत्रु को नष्ट करने वाले हैं। मेरी पुत्री अपने गुणों से 'विशेषेण राजते इति विराट्' है। मैं स्वयं अपने नाम के द्वारा प्रसिद्ध हूँ। मेरे पति पर भी मेरी उत्तम कीर्ति व्याप्त है। जो लोग वेद में पुत्री की उपेक्षा की बात करते हैं उनको वेद के 'दुहिता विराट्' शब्द पर ध्यान देना चाहिए।

इतना ही नहीं अपितु वैदिक नारी अपने पति को गृह कार्यों में भी उचित परामर्श देकर उसकी सहायिका बनती है। अथर्ववेद १४।१।२० में कहा गया है–**त्वं विदथम् आवदासि।** अर्थात् हे पत्नी, तू हमें ज्ञान का उपदेश कर। पत्नी पति को धन प्राप्ति के उपाय भी बतलाती है–**पतिं देवि राधसे चोदयस्व** (अथर्व० ७।४६।३) पति कहता है–तू सब–कुछ जानने वाली हमें धन–धान्य की पुष्टि दे– **''आद्य रायस्पोषं चिकितुषी दधातु''** (अथर्व० ७।४७।२)। ''तू हमारे घर की प्रत्येक दिशा में ब्रह्म अर्थात् वैदिक ज्ञान का प्रयोग कर'' **''ब्रह्मापरं युज्यतां ब्रह्म पूर्व ब्रह्मान्ततो मध्यतो ब्रह्म सर्वतः''** (अथर्व० १४।१।६४)। इन सब वचनों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि वेद की सम्मति में प्रत्येक स्त्री को विवाह से पूर्व, जहाँ तक हो सके, सब प्रकार के ज्ञान प्राप्त कर लेने चाहिएँ ताकि वह गृहस्थ जीवन में उनका यथायोग्य उपयोग कर सके। अथर्ववेद १।१४।३ में कन्या के लिए कुलपा = (कुल का पालन करनेवाली) शब्द आया है। इसी प्रकार यजुर्वेद (१४।२) में 'पुरन्धि' शब्द भी इसी अर्थ में पठित है। अथर्ववेद (१४।१।४२) में पत्नी को सौमनस्य, सौभाग्य तथा ऐश्वर्य की कामना करने के लिए कहा गया है, किन्तु यह तभी सम्भव है जबकि वह पति के व्रत का अनुगमन करनेवाली हो। भाव यह है कि ऐसा करने से ही घर में सौमनस्य तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी अन्यथा नहीं। इसी अभिप्राय से अथर्ववेद (२।३६।४) में भी पत्नी को पति से विरोध न करनेवाली=**'पत्याऽविराधयन्ती'** कहा है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में स्त्री का अत्यन्त ही तेजस्वी शेष पृष्ठ 7 पर

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के पूर्व राष्ट्रीय महासचिव स्व. प्रो. श्योताज सिंह जी की छठीं पुण्यतिथि के अवसर पर 30 अप्रैल, 2024 को यज्ञ एवं प्रेरणा सभा का आयोजन बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी की उपस्थिति में किया गया

श्री सुन्दर यादव ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के पूर्व राष्ट्रीय महासचिव स्व. प्रो. श्योताज सिंह जी की छठवीं पुण्यतिथि के अवसर पर 30 अप्रैल, 2024 को उनके पैतृक गांव–जैनाबाद, जिला–रेवाड़ी में विशेष यज्ञ एवं प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उनके अतिरिक्त श्री राजेश यादव, श्री सुरेन्द्र यादव, श्री रविन्द्र यादव, श्री अश्विनी पण्डित एवं परिवार के सभी गणमान्य सदस्य एवं बड़ी संख्या में महिलाएं सम्मिलित हुई।

स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया और प्रो. श्योताज सिंह जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि प्रो. श्योताज सिंह एक त्यागी, तपस्वी एवं संघर्षशील नेता थे। उन्होंने जीवन की सभी सुख–सुविधाओं को त्यागकर संघर्ष का रास्ता अपनाया और समाज के बेजुबान लोगों की जुबान बनें। उन्होंने बंधुआ मजदूरों, दलित एवं आदिवासियों तथा शोषित, पीड़ित किसानों के लिए जीवनभर संघर्ष किया। इसके कारण कई बार उन पर जानलेवा हमले भी किये गये। किन्तु वे एक निडर व्यक्ति थे और उन्होंने कभी भी अपना कदम पीछे नहीं हटाया। वे प्रतिभा के धनी थे, बचपन से ही वे बुद्धिमान छात्र रहे और शिक्षा पूरी होने के बाद कॉलेज में कई वर्ष तक प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। उन्होंने स्वामी अग्निवेश जी के साथ काम करने के लिए अपनी कॉलेज की नौकरी को ठुकराया और संघर्ष की आग में छलांग लगा दी। ऐसे व्यक्ति समाज में बिरले हुआ करते हैं तो सभी सुख–सुविधाओं एवं जीवन की ऐषणाओं को ठुकराकर त्याग एवं तप का मार्ग चुनते हैं। प्रो. श्योताज सिंह जी का जीवन अत्यन्त पवित्र एवं सात्विक था। उनकी जीवनशैली निराली थी। एक बार जो निश्चय वे कर लेते थे उससे फिर वे कभी पीछे नहीं हटते थे। ऐसे महान् व्यक्तित्व को स्मरण करते हुए हम सभी लोग उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करें कि हम भी समाज में कुछ विशेष कर सकें। स्वामी आर्यवेश जी ने सभी साथियों से विचार–विमर्श करने के पश्चात् घोषणा की कि प्रो. श्योताज सिंह की स्मृति में गांव–जैनाबाद में एक ई–लाईब्रेरी स्थापित की जायेगी जिसमें ग्रामीण प्रतिभावान युवाओं को निःशुल्क सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी, ताकि वे जीवन में कौशल प्राप्त करके उन्नति कर सकें।

कार्यक्रम के उपरान्त कार्यकर्ताओं के साथ विशेष बैठक की गई जिसमें ई–लाईब्रेरी एवं क्षेत्र में आर्य समाजों की स्थापना करने पर विचार किया गया। इस पूरे कार्यक्रम के संयोजक श्री सुन्दर यादव ने सभी आगन्तुक महानुभावों के लिए भोजन/प्रसाद की समुचित व्यवस्था की थी। बैठक के बाद सभी ने भोजन ग्रहण किया। स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य सभी प्रमुख साथियों ने ई–लाईब्रेरी खोलने के लिए स्थान का भी निरीक्षण किया। पूरा कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह एवं ऊर्जा प्रदान करने वाला रहा।

ग्राम–भोंडसी, जिला–गुरुग्राम, हरियाणा में डब्ल्यू.ई.एम. का हुआ शुभारम्भ

स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में यज्ञ का हुआ अनुष्ठान

स्वामी आदित्यवेश जी एवं श्री विशाल मलिक जी तथा श्री नवीन जी रहे उपस्थित

गत् 26 अप्रैल, 2024 को ग्राम–भोंडसी, जिला–गुरुग्राम में डब्ल्यू.ई.एम. (रेसलिंग एक्सट्रीम माईना) का यज्ञ के द्वारा शुभारम्भ हुआ। पूरे विश्व में विख्यात डब्ल्यू.डब्ल्यू.ई. कुश्ती का भारत में विशेष प्रचलन नहीं है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध युवा व्यवसायी श्री विशाल मलिक ने अपने विशिष्ट सहयोगी के साथ मिलकर एक कुश्ती अकादमी प्रारम्भ की है जो डब्ल्यू.ई.एम. के नाम से जानी जायेगी। इस प्रकार की कुश्ती के लिए प्रारम्भ होने वाली भारत की पहली इकाई है। अकादमी के शुभारम्भ के अवसर पर विशेष यज्ञ किया गया जिसे स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी ने अपनी गरिमामयि उपस्थिति में सम्पन्न कराया।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के कार्यकर्ता श्री अमर जी के पूज्य पिता श्री शंकर राव सुर्वे जी का आकस्मिक निधन

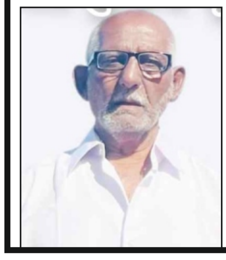

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के कार्यकर्ता श्री अमर जी के पूज्य पिता श्री शंकर राव सुर्वे जी का दिनांक 24 अप्रैल, 2024 (बुधवार) को रात्रि 10.17 बजे निधन हो गया। श्री शंकर राव जी काफी दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनके आकस्मिक निधन से जहाँ उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है वहीं समाज की भी अपूर्णीय क्षति हुई है। उनका अन्तिम संस्कार 25 अप्रैल, 2024 को पूर्ण वैदिक रीति से दोपहर लगभग 2 बजे पुराना पुल श्मशान घाट पर किया गया। श्री शंकर राव सुर्वे जी के निधन पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी तथा समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए उनकी आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

श्री बाबूलाल आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीरमती आर्या के विवाह की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में दिनांक 25 अप्रैल, 2024 को जनसेवा धर्मशाला, नई अनाज मंडी, भिवानी में विशाल आर्य सम्मेलन का हुआ भव्य आयोजन

प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी का हुआ मुख्य उद्बोधन

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री बाबूलाल आर्य ग्राम–जुई (भिवानी) एवं उनकी सहधर्मिणी श्रीमती वीरमती आर्या के विवाह की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर गत् 25 अप्रैल, 2024 को प्रातः 9 से सायं 5 बजे तक जनसेवा धर्मशाला, नई अनाज मंडी भिवानी में विशाल आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या जी, संयोजक प्रवेश आर्या जी, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क, महाशय दीपचन्द आर्य एवं तन्नू आर्या की भजन मंडली भी सम्मिलित हुई। सम्मेलन का शुभारम्भ प्रातः 9 बजे यज्ञ से हुआ। यज्ञ में कन्या गुरुकुल पंचगांव, जिला–भिवानी की ब्रह्मचारिणियों एवं आचार्या जी ने वेद पाठ किया तथा यज्ञ को विधिवत रूप से सम्पन्न कराया।

यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने इस यज्ञ के मुख्य यजमान श्री बाबूलाल आर्य को विशेष प्रेरणा दे हुए वानप्रस्थ की दीक्षा लेने का सुझाव दिया। स्वामी जी ने बताया कि वर्तमान समय में आश्रम व्यवस्था बिगड़ी हुई है। वानप्रस्थी और संन्यासी नहीं बन रहे हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि प्रत्येक आर्य महानुभाव जिसकी आयु 50 या 60 वर्ष से ऊपर हो चुकी है, वह वानप्रस्थी अवश्य बनें और वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर स्वाध्याय, साधना एवं समाजसेवा का कार्य करें। इससे व्यक्ति का वर्तमान एवं भविष्य दोनों सुधरते हैं।

यज्ञ के उपरान्त सभागार में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसमें श्री तेजवीर आर्य पानीपत, महाशय दीपचन्द आर्य खेड़ा, हिसार, बहन तन्नू आर्या एवं महाशय सहदेव बेधड़क के भजनों का प्रभावशाली कार्यक्रम रहा।

इस अवसर पर बहन पूनम आर्या जी तथा बहन प्रवेश आर्या जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने बच्चों के संस्कार निर्माण पर विशेष बल दिया।

कार्यक्रम में मुख्य उद्बोधन स्वामी आर्यवेश जी का रहा। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए आर्यों का आह्वान किया कि महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर सभी आर्यजन संकल्प लें कि वे आर्य समाज के सिद्धान्तों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए कार्य करेंगे। नये नवयुवकों, महिलाओं तथा दलित वर्ग के लोगों को अधिक से अधिक आर्य समाज में लायेंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने महिलाओं तथा समाज के उपेक्षित लोगों की सबसे अधिक वकालत की थी। उन्होंने जन्मना जाति प्रथा एवं स्त्री–पुरुष के भेदभाव को चुनौति देकर पूरे समाज को झकझोर दिया था। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि आज भी जन्मना जाति प्रथा एवं स्त्री–पुरुष का भेदभाव प्रचलित है। बेटी के जन्म लेने को अपसकुन मानने वाला समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता। स्वामी आर्यवेश जी ने विशेष रूप से आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया कि वे कोई गांव ऐसा न छोड़ें जहां कम से कम 11 लोगों की आर्य समाज की इकाई न बना दी गई हो। अर्थात् प्रत्येक गांव में आर्य समाज की स्थापना की जाये और वहां प्रचार की व्यवस्था की जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने इस बात पर बल दिया कि अपने सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए पुनः शास्त्रार्थ परम्परा को प्रारम्भ करना चाहिए। उन्होंने बताया कि शास्त्रार्थ महारथी, उपदेशक एवं भजनोपदेशक तैयार करने के लिए स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक में प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया जायेगा और जो नवयुवक, उपदेशक, भजनोपदेशक या शास्त्रार्थ महारथी बनना चाहते हैं वे अपना परिचय (बायोडाटा) लिखित तैयार करके आवेदन भेजें, ताकि अपेक्षित संख्या पूरी होने के साथ ही यह प्रशिक्षण का कार्यक्रम प्रारम्भ हो सके। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि इस प्रशिक्षण के लिए आवेदनकर्ता युवकों को सभी सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध कराई जायेंगी। योग्य विद्वान् एवं संगीतज्ञ उन्हें प्रशिक्षण देंगे। यह महत्त्वाकांक्षी योजना इस वर्ष के अन्त तक शुरू करने का संकल्प है। आशा है इच्छुक नवयुवक अवश्य ही इस योजना का लाभ उठायेंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने श्री बाबूलाल आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी बहन श्रीमती वीरमती आर्या को दीर्घायु एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएं दी।

इस सम्मेलन का संयोजन सेवानिवृत्त एस.डी.एम. श्री इन्दर सिंह आर्य ने किया। उनके अतिरिक्त सर्वश्री डॉ. भूप सिंह आर्य, सेवानिवृत्त तहसीलदार श्री मंगल सिंह, श्री ओम प्रकाश प्रधान कन्या गुरुकुल पंचगांव, कैप्टन सूरजमल आर्य, श्री चन्द्र प्रकाश मलिक, श्री जय प्रकाश आर्य, श्री विमलेश आर्य प्रधान आर्य समाज घण्टाघर, श्री विजय आर्य प्रधान कृष्णा कालोनी आर्य समाज, श्री रामफल आर्य, श्री सुभाष आर्य एवं श्री अजीत आर्य, आर्य समाज नया बाजार एवं श्री वेदप्रिय आर्य, प्रभावति आर्या, विद्या आर्या आदि का भी विशेष सहयोग रहा। इस पूरे कार्यक्रम में श्री बाबूलाल आर्य के सुपुत्र श्री करमपाल आर्य एवं श्री सत्यपाल आर्य एवं उनके अन्य सभी साथियों एवं सम्बन्धियों ने व्यवस्था बनाने में अपूर्व योगदान दिया। कार्यक्रम में भोजन की समुचित व्यवस्था की गई थी और मध्यान्ह भोजन के उपरान्त सायं 5 बजे तक उत्सव का कार्यक्रम चलता रहा। सभागार पूर्णतया वातानुकूलित था। अतः श्रोताओं को किसी भी प्रकार की कोई असुविधा नहीं हुई। सम्मेलन पूरी तरह सफल रहा।

सफलता में बाधक – नकारात्मक विचार

– सीताराम गुप्ता

हेनरी फोर्ड ने कहा है कि अगर आपको विश्वास है कि आप सफल हो सकते हैं तो आप सही हैं और अगर आपको विश्वास है कि आप सफल नहीं हो सकते तो भी आप सही हैं। हमारा विश्वास ही सफलता प्रदान करता है और हमारा विश्वास ही असफलता प्रदान करता है लेकिन दोनों प्रकार के विश्वासों में अन्तर होता है। एक सकारात्मक विश्वास है तो दूसरा नकारात्मक विश्वास। सकारात्मक विश्वास सफलता प्रदान करने में सक्षम है तो नकारात्मक विश्वास असफलता के लिए उत्तरदायी है। कल ऑफिस जाने के लिए जैसे ही घर से निकले बरसात हो गई और सारे कपड़े खराब हो गये जिससे दिन भर परेशानी होती रही। लेकिन इसका ये अर्थ तो नहीं कि आज भी वैसा ही होगा या हमेशा ही ऐसा होता रहेगा। क्या ऐसा सोचकर ऑफिस जाना ही छोड़ दिया जाये? जहाँ प्रायः रोज बारिश होती है वहाँ भी लोग काम पर जाते ही हैं।

एक बार वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया। उन्होंने एक एक्वेरियम में एक बड़ी पाइक मछली को रखा और उसी एक्वेरियम में उसके खाने के लिए कुछ छोटी मछलियाँ रख दीं। जब भी बड़ी पाइक मछली को भूख लगती वो छोटी मछलियाँ खा लेती। कुछ दिनों बाद जब एक्वेरियम में सारी छोटी मछलियाँ समाप्त हो गई तो वैज्ञानिकों ने एक्वेरियम के बीच में कांच की एक दीवार लगा दी और दीवार के दूसरी तरफ पहले जैसी ही छोटी मछलियाँ डाल दीं। अब बड़ी पाइक मछली को जब भूख लगती वो छोटी मछलियों की ओर लपकती लेकिन बीच में कांच की दीवार होने के कारण उससे जा टकराती जिससे हर बार उसे चोट लगती है। कुछ समय तक तो ये सिलसिला जारी रहा लेकिन बार–बार चोट लगने और छोटी मछलियों तक न पहुँच पाने के कारण बड़ी पाइक मछली ने कांच की दीवार के पार तैरती छोटी मछलियों को खाने की कोशिश करना ही छोड़ दिया।

बड़ी पाइक मछली भूख से बुरी तरह व्याकुल थी लेकिन आगे उसने अपनी भूख मिटाने के लिए किसी तरह का कोई प्रयास नहीं किया और चुपचाप एक कोने में जाकर ठहर गई। जब वह भूख के कारण अत्यन्त व्याकुल अवस्था में पहुँच गई तो वैज्ञानिकों ने एक्वेरियम के बीच में लगाई गई कांच की दीवार को हटा दिया। अब बड़ी पाइक मछली आसानी से छोटी मछलियों को अपना आहार बना सकती थी लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और कुछ दिनों के बाद वह भूख से तड़प–तड़प कर मर गई। प्रश्न उठता है कि बाद में वहाँ पर्याप्त संख्या में छोटी मछलियाँ होने पर भी बड़ी पाइक मछली ने उन्हें अपना शिकार क्यों नहीं बनाया? वास्तव में पहले अनेक कोशिशों में असफल व घायल होने के कारण बड़ी पाइक मछली ने मान लिया कि अब कोई कोशिश काम नहीं आयेगी। एक नकारात्मक विश्वास के लिए उसकी कंडीशनिंग हो गई और इस नकारात्मक विश्वास ने ही उसकी जान ले ली।

जीवन में हमारे साथ भी कई बार ऐसा ही होता है। हम भी भूतकाल के निराशादायक व दुःखद अनुभवों के कारण नकारात्मक विश्वास से ग्रस्त हो जाते हैं। हमें लगता है कि सफलता अथवा आरोग्य हमारी किस्मत में ही नहीं है। अतः प्रयास करना बेकार है। इसी कारण जब सफलता अथवा उन्नति का कोई अवसर हमारे सामने आता भी है तो उसे गुजर जाने देते हैं। क्यों? क्योंकि हमें विश्वास हो जाता है कि पिछले अनुभवों के विपरीत कुछ नहीं हो सकता और समय के साथ ये विश्वास दृढ़ होता जाता है। इस नकारात्मक विश्वास के लिए हमारी कंडीशनिंग हो जाती है। इसी प्रकार के नकारात्मक विश्वासों के कारण ही हम जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते अथवा उत्कृष्टता से कोसों दूर रह जाते हैं या व्याधियों का उपचार नहीं करते अथवा दवाएँ नहीं लेते। अब प्रश्न उठता है कि इस स्थिति से उबरने के लिए क्या करें?

इसके लिए हमें अपनी नकारात्मक कंडीशनिंग को तोड़ना पड़ेगा। सबसे पहले तो ये बात मन में बिठानी होगी कि हम पाइक मछली नहीं हैं। पाइक मछली कांच की दीवार को नहीं तोड़ सकती लेकिन हम कांच की दीवार रूपी बाधाओं को आसानी से ध्वस्त कर सकते हैं। रुकावटों को समझना और उन्हें दूर करना ही वास्तविक सफलता है। कई बार कुछ अवरोध लंबे समय तक बने रह सकते हैं लेकिन इसका ये अर्थ कदापि नहीं कि ये अवरोध हटेंगे ही नहीं या इन्हें कभी भी पार नहीं किया जा सकेगा। अवरोध हटने या उन्हें पार करने की संभावना कभी समाप्त नहीं होती। हमें धैर्य के साथ उनके हटने की प्रतीक्षा करने के साथ–साथ उन्हें पार करने के लिए कोशिश करते रहना चाहिए। यदि अत्यधिक विषम परिस्थितियों के कारण हम कुछ अधिक नहीं कर पाते तो उन परिस्थितियों के बदलने पर हमें फौरन सक्रिय हो जाना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि हम सतर्क रहकर घटनाक्रम की पूरी जानकारी रखें।

लोहा गरम होने तक इंतजार करें और जैसे ही लोहा गरम हो जाये उस पर चोट करें अर्थात् जैसे ही परिस्थितियाँ अनुकूल हों हम अपेक्षित प्रतिक्रिया करें। हमारी जो प्रारम्भिक असफलताएँ होती हैं वे असफलताएँ ही हमारी सफलता की नींव के पत्थर बनती हैं, इसलिए जरूरी है कि असफलता की पीड़ा को भुलाकर हर बार नए सिरे से प्रयास करने का निर्णय लें। व्यवसाय हो अथवा सम्बन्ध या स्वास्थ्य अथवा रोगमुक्ति जीवन के हर क्षेत्र में यही बात लागू होती है। पहले जिन लोगों को टीबी अथवा क्षय रोग हो जाता था उसकी मृत्यु निश्चित थी, लेकिन आज इस बीमारी का उपचार न केवल पूरी तरह से सम्भव हो गया है अपितु सरल भी हो गया है।

यदि टीबी अथवा क्षय रोग होने पर हम उस समय का हवाला देकर कहें कि इस रोग का उपचार असंभव था और उपचार न करें अथवा बीच में ही छोड़ दें तो इसके लिए कौन दोषी होगा? हमारा नकारात्मक विश्वास ही इसके लिए उत्तरदायी होगा। कई लोग बड़े जिद्दी होते हैं। उन्हें लाख समझाओ लेकिन कहते रहेंगे कि ये काम तो वे बिल्कुल नहीं कर सकते। ये उनके भूतकाल के निराशादायक व दुःखद अनुभवों के कारण भी हो सकता है। कुछ लोग जीवन में बार–बार धोखा खा चुके होते हैं अतः एक तरह से उनका ये विश्वास ठीक भी है लेकिन ये पूरी तरह से नकारात्मक विश्वास है। इसी नकारात्मक विश्वास के कारण वे अपना दृष्टिकोण बदलने को तैयार नहीं होते और जीवन में अनेक संभावनाओं से वंचित रह जाते हैं। जीवन हमेशा संभावनाओं से पूर्ण होता है लेकिन तभी जब हम भूतकाल के निराशादायक व दुःखद अनुभवों से उत्पन्न नकारात्मक विश्वास को अपने अंदर घर न करने दें।

कुछ व्यक्ति जब कोई नया काम करते हैं अथवा कोई नई चीज करना सीखते हैं तो शीघ्र अपेक्षित सफलता न मिलने पर उसे हमेशा के लिए छोड़ देते हैं। जब हम स्कूटर, कार अथवा अन्य वाहन चलाना सीखते हैं तो शुरू में कई समस्याएँ आ खड़ी होती हैं। कई बार वाहन चलाते समय हड़बड़ी में कुछ गलती भी हो जाती है। सही समय पर ब्रेक नहीं लगा पाते अथवा गाड़ी की गति धीमी नहीं कर पाते। ड्राइविंग सीखते समय छोटी–मोटी दुर्घटना भी स्वाभाविक है। यदि ड्राइविंग सीखते समय कोई छोटी–मोटी दुर्घटना हो जाये तो कई लोग उसी वक्त हाथ खड़े कर देते हैं। उनका तर्क होता है कि उनसे फिर कोई दुर्घटना हो जायेगी। ये उनके नकारात्मक विश्वास के कारण ही होता है। नकारात्मक विश्वास उत्पन्न करने में कई बार हमारे अपने कटु अनुभव उत्तरदायी होते हैं तो कई बार हमारे आस–पास के लोग भी इसके लिए कम उत्तरदायी नहीं होते।

जब हम लोगों से बार–बार सुनते हैं कि ये तुमसे नहीं होगा या ये तुम्हारे करने की चीज नहीं है तो हममें नकारात्मक विश्वास उत्पन्न होने लगता है। नकारात्मक विश्वास के कारण कई बार हम सीखी हुई चीज भी भूल जाते हैं। एक घटना याद आ रही है। एक सज्जन ने अपनी भतीजी को कार चलानी सिखाई। पहले एक प्रसिद्ध ड्राइविंग कॉलेज से ड्राइविंग सिखलाई और बाद में स्वयं पर्याप्त अभ्यास करवाया। लड़की कार चलाने में बहुत अच्छी हो गई और स्वयं अकेले ड्राइविंग करने लगी लेकिन लड़की के पिता प्रायः कहते थे कि जब हमारे पास कार ही नहीं है तो सीखने का क्या फायदा? या कहते थे कि किसी दिन ठोक दी तो लेने के देने पड़ जायेंगे। कुछ दिनों में ही लड़की के अन्दर इतना नकारात्मक विश्वास उत्पन्न हो गया कि वो गाड़ी को छूने से भी डरने लगी। जो भी हो हर प्रकार के नकारात्मक विश्वास की कंडीशनिंग से मुक्ति अनिवार्य है क्योंकि इसका जीवन के हर क्षेत्र में बुरा प्रभाव पड़ता है।

कई बार जीवन में मिली लगातार असफलताओं के बाद व्यक्ति प्रयास करना ही छोड़ देता है, लेकिन तभी अचानक एक दिन उसे बड़ी सफलता मिल जाती है। कई लोग इसे किस्मत से मिली सफलता कहते हैं, लेकिन वास्तव में ये पिछले प्रयासों अथवा असफलताओं के अनुभवों के कारण ही संभव हो पाता है। बहरहाल हमें असफलताओं से घबराकर न तो आगे प्रयास करना छोड़ना चाहिए और न ही असफलताओं को दोष देना चाहिए। जब हम किसी शिलाखंड को तोड़ना चाहते हैं तो उस पर जोर से वार करते हैं लेकिन प्रायः पहले वार में पत्थर नहीं टूटता। हम जब तक पत्थर टूट नहीं जाता उस पर हथौड़ा चलाते रहते हैं और इसका कारण है हमारा सकारात्मक विश्वास कि पत्थर अंततः किसी न किसी वार से अवश्य टूट जायेगा। इसलिए जब तक सफलता नहीं मिल जाती तब तक कार्य बीच में छोड़ने की बजाय निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए। परिणाम मिलते अवश्य हैं लेकिन कई बार देर से मिलते हैं। हमें अपेक्षित परिणाम अथवा सफलता मिलने तक धैर्य के साथ अपने कार्य में जुटे रहना चाहिए। जीवन में हर प्रकार की सफलता के लिए असंभव शब्द को मन रूपी शब्दकोष से डिलीट करना अनिवार्य है। नकारात्मक विश्वास से मुक्ति के लिए हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि यदि दुनिया में कोई भी काम कोई भी व्यक्ति कर सकता है तो हम भी उसे अवश्य कर सकते हैं। नकारात्मक विश्वास से बचने के लिए किसी भी कार्य को सीखने के लिए पर्याप्त अभ्यास करें, कार्य को पूरे मन से करें व मन में पूर्ण विश्वास रखें कि मैं कर सकता हूँ। मैं भी सफलता प्राप्त कर सकता हूँ।

●

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन – पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

आचारहीनम् न पुनन्ति वेदाः

- ओम प्रकाश भारद्वाज

ईश्वरः सर्व भूताम् हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया।। 18-61

हे अर्जुन! ईश्वर प्रत्येक जीव के हृदय में स्थित है और भौतिक शक्ति से निर्मित यन्त्र में सवार की भांति बैठे समस्त जीवों को अपनी माया से घुमा रहे हैं।

ऋग्वेद में भी कहा है-

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि। अप नः शोशुचदघम्।

हे प्रकाश मान देव आप सर्वत्र मुख वाले हैं। हम आपकी शरण में उपस्थित होते हैं क्योंकि आप सर्वत्र व्यापक हैं हम आपसे विनती करते हैं कि हमारा पाप विनष्ट हो। अतः हमें प्रभु को सर्वव्यापक और सर्वदृष्टा मानते हुए ऐसे शुभ कर्म ही करने चाहिए जो परोपकार की भावना से भरे हुए हों। अपना पेट तो शूकर और कूकर भी भर लेते हैं। यदि हमारे सामने सदा अपना स्वार्थ ही प्रधान रहा तो हममें और पशुओं में अन्तर ही क्या रहेगा, क्योंकि आहार, निद्रा, भय और मैथुन में तो मनुष्य पशुओं के सामन ही है, परन्तु जब मनुष्य अपने धर्म अर्थात् कर्तव्यों की ओर देखता है तब वह पशुओं से भिन्न दिखाई देता है। उसे ज्ञात है कि "आचार! परमो धर्मः" अर्थात केवल हमारा आचरण, हमारा सद व्यवहार और हमारा सदा शुभ कर्मों का आचरण ही परम धर्म है। यदि हम लोभादि के वशीभूत होकर दुष्कर्मों की कीचड़ में फंस जायेंगे तो उससे कभी भी बाहर नहीं निकल पायेंगे। हम किसी को अपना मुंह दिखाने के लायक भी नहीं रहेंगे।

परन्तु आज का मानव क्षणिक सुख के लिये येन-केन प्रकारेण दूसरों का धन छीनने में ही अपनी योग्यता और समझदारी समझता है, उसे यह पता नहीं रहता कि इस प्रकार के कुकृत्य से वह पाप का भागी होगा, उसका मानव जीवन व्यर्थ होगा। यदि हम भ्रष्ट तरीकों से धन का अर्जन करते हैं, तो हम निश्चित रूप से दूसरों का हक छीनते हैं। हम परमेश्वर और समाज की दृष्टि में पतित, अधम, नीच और हेय समझे जायेंगे हमारा इह लोक तो बिगड़ेगा ही पर परलोक को भी सुधारने में हम सर्वथा असमर्थ रहेंगे।

हम परम पिता परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ सन्तान हैं। इसलिए हमें जीवन में श्रेष्ठतम कार्य ही करने चाहिए। भक्त सर्वशक्तिमान एवं परम दृढ़ परमेश्वर से प्रार्थना करता है। मुझे अपने समान सर्वशक्तिमान एवं दृढ़, बनाओ। मैं अपना सारा जीवन तुम्हारी छत्र छाया में ही व्यतीत करूँ। मुझे यह स्मरण रहे कि तुम मुझे हर समय देखते हो, क्योंकि तुम सृष्टि के कण-कण में व्याप्त हो। तुम्हारी स्मृति जागृत रखते हुए और तुम्हें निरन्तर अपने सामने अनुभव करते हुए मैं पूर्ण आयु प्राप्त करूँ, समाज के सामने सभ्य, सुशिक्षित और प्रतिष्ठित कहलाऊँ। प्रत्येक क्रिया और चेष्टा करते हुए मुझे यह अनुभव हो कि तुम मुझे देख रहे हो।

जो व्यक्ति इस प्रकार प्रभु को सर्वव्यापक मानता है, उसे कोई भी काम, क्रोध और लोभ कदापि नहीं सता सकते, उस पर अपना कुप्रभाव नहीं डाल सकते क्योंकि गीता में स्पष्ट लिखा है :-

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
काम क्रोधस्तथा लोभः तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।

अर्थात जो काम क्रोध और लोभ के पाश में फंस गया, उसका जीवन दुखमय एवं कष्टमय हो जायेगा, वह नारकी जीवन बिताने के लिए विवश हो जायेगा। उपनिषद हमें शिक्षा देते हुए स्पष्ट कह रहे हैं कि -

ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किचं जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथ मागृधः कस्यस्विद् धनम्।।

हे मनुष्यों प्रभु कण-कण में व्याप्त है। हम संसार में प्रत्येक कार्य निष्काम भाव से करें। किसी दूसरे के धन को लेने की कुचेष्टा न करें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अधर्म से मनुष्य खूब बढ़ता है, फलता फूलता है, कुछ समय के लिए समाज में सम्मान पूर्वक जीवन भी बिताता है, दूसरों की दृष्टि में बड़ा धनवान और भाग्यवान भी दिखाई देता है, परन्तु कुछ वर्षों के बाद वह समूल नष्ट हो जाता है, वह खूब पछताता है और अपने द्वारा किये गये कुकृत्यों पर खूब रोता है। कहा भी है -

अधर्मेण एधते पुरुषः दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते तु एकादशे वर्षे समूलञ्च विनश्यति।।

जिन मनुष्यों का आचार, विचार शुद्ध नहीं है उनको वेद भी पवित्र नहीं कर सकते वे आजीवन कलंकित जीवन बिताने के लिए विवश हो जाते हैं। कहा भी है -

आचारहीनम् न पुनन्ति वेदाः।

हमारे महा पुरुषों ने धन के उपयोग करने के तीन ही साधन बताये हैं सर्वप्रथम यदि हम धनवान हैं तो अपने धन को किसी दीन, हीन, अपाहिज एवं भूखों को बाँटें। यह धन का सर्वोत्तम रूप है। इसके अतिरिक्त यदि हम अपना धन अपने परिवार के भरण-पोषण में अथवा अपनी सन्तान की उन्नति के कार्यों में लगाते हैं तो यह धन का मध्यम रूप है। यदि हम उपर्युक्त दोनों साधन नहीं अपनाते हैं तो हमारा धन नष्ट हो जायेगा क्योंकि कहा भी है -

दानं भोगः नाशः तिस्तो गतयः वित्तस्य भवन्ति।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

अतः प्रभु से प्रार्थना है कि हम धर्म से ही धन का अर्जन करें, उसकी सुरक्षा करें, किसी के धोखे में न आयें, हम अपने धन को अपने परिवार, समाज और देशहित के कार्यों में ही लगायें, तभी हमारा कल्याण होगा और मानव जीवन सफल होगा।

- एम. ए. शास्त्री, साहित्य रत्न, यू.-128, शकरपुर, दिल्ली-12

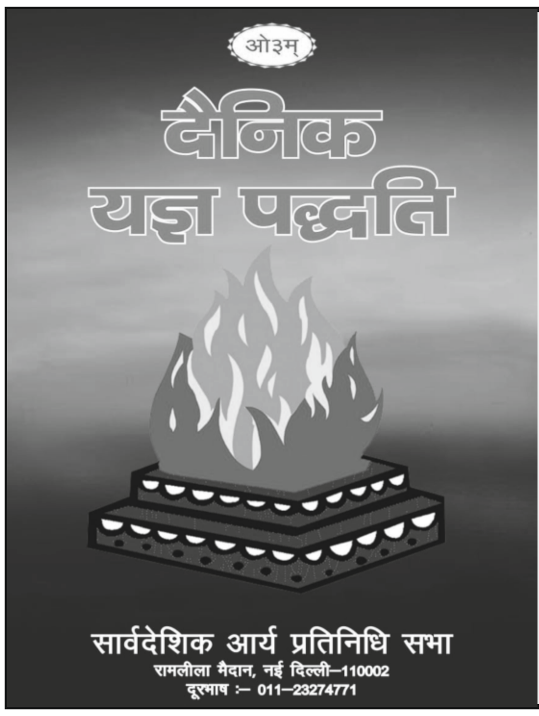

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहदयज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

पृष्ठ 3 का शेष

वेदों में प्रतिपादित नारी का आदर्श स्वरूप

स्वरूप इस प्रकार वर्णित है। स्त्री कहती है कि मैं ध्वज के तुल्य अग्रगण्य हूँ। मैं ही मूर्धा के समान प्रमुख हूँ। आवश्यकता पड़ने पर मैं उग्र स्वरूपवाली भी हो जाती हूँ तथा मैं श्रेष्ठ वक्ता भी हूँ। मेरे यशस्वी कार्यों के अनुरूप ही मेरा पति आचरण करे।४ इसी प्रकार ऋग्वेद के ही एक अन्य मन्त्र में स्त्री को शत्रुनाशक, विजयिनी कहा है।५

कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि वेद में स्त्रियों के साथ सखाभाव का निषेध किया गया है।६ यह भेदपूर्ण स्थिति है। इसका उत्तर यह है कि आचरण की शुद्धता और चारित्रिक दृष्टिकोण के कारण ऐसा कहा गया है। वेद में पति का पत्नी के प्रति सखाभाव रखने का स्पष्ट उल्लेख है, किन्तु सभी स्त्रियों के साथ सखाभाव का औचित्य नहीं है जैसाकि आजकल स्कूल–कॉलेजों में तथा अन्यत्र भी Girl Friend तथा Boy Friend की प्रथा चल पड़ी है। इससे अनेक चारित्रिक दोष पैदा हो रहे हैं। चारित्रिक शुद्धता के कारण ही मनुस्मृति में तो यहाँ तक प्रतिबन्ध लगा दिया गया है कि माता, बहिन तथा बेटी के साथ एक ही आसन पर न बैठे। कितनी व्यवहारिक बात है। संग से चारित्रिक दोष उत्पन्न हो सकता है इसीलिए वेद में स्त्री के साथ मैत्रीभाव का निषेध किया गया है।

अन्य वैदिक-साहित्य—वेद के समान ब्राह्मण—गन्थों में भी स्त्री को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। शतपथ ब्राह्मण७ में पत्नी को पति का आधा भाग मानकर यहाँ तक कह दिया गया है कि जब तक व्यक्ति पत्नी को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक अपूर्ण ही रहता है। इसी प्रकार के भाव ऐतरेय आरण्यक८ में भी प्रकट किये गये हैं। उपनिषद् काल में भी नारी की यही बहुत उत्कृष्ट स्थिति रही है। उपनिषद् काल में नारी ब्रह्मवादिनी रही है। याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ में गार्गी याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मवेत्ता को भी शास्त्रार्थ में निरुत्तर कर देती है। इसी प्रकार मैत्रेयी सांसारिक भोग, ऐश्वर्य, धन–धान्य की अपेक्षा ज्ञान प्राप्त करने को प्रमुखता देती है। यह है उपनिषद्कालीन नारी का गौरवपूर्ण इतिहास।

स्मृति ग्रन्थों में भी नारी की अति–सम्माननीय स्थिति का चित्रण है। मनुस्मृति में भी भार्या को मनुष्य का आधा भाग तथा श्रेष्ठतम सखा कहा गया है।९ मनुस्मृति का वह श्लोक तो सर्वविदित ही है जिसमें कहा गया है कि जहाँ स्त्रियों का सत्कार होता है। वहाँ देवता निवास करते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अन्य श्लोक की तरफ आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहती हूँ जिसमें कहा गया है, कि जहां नारियों का उत्पीड़न होता है उनपर अत्याचार होता है वे रोती हैं, पीड़ित होती हैं, वह समाज और शब्द नष्ट हो जाता है।१० आज के सभ्य समाज में नारी का अनेक प्रकार से शोषण हो रहा है, उसका उत्पीड़न हो रहा है अतः आज हमारा समाज तथा राष्ट्र–पतन की ओर ही उन्मुख है, घरों से सुख–शान्ति मानो विदा हो चुकी है।

हमें इस ओर विचार करना चाहिए। द्वापर युग में अकेली द्रौपदी पर हुए अत्याचार ने महाभारत करा दिया था। आज तो न जाने कितनी ललनाएँ उससे भी गयी–बीती दशा को प्राप्त कर रही हैं। आज का तथाकथित सभ्य समाज क्या इस ओर ध्यान देगा।

अध्यक्ष - संस्कृत विभाग, वैश्य आर्यकन्या
महाविद्यालय, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2024

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

वैदिक विरक्तों एवं यतियों का महत्त्वपूर्ण सम्मेलन 27 व 28 मार्च, 2024 को गुरुकुल आमसेना में हुआ आयोजित

वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने की सम्मेलन की अध्यक्षता

गत् 27 व 28 मार्च, 2024 को गुरुकुल आमसेना, खरियार रोड, उड़ीसा में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के आमंत्रण पर वैदिक विरक्त सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में स्वामी धर्मानन्द जी के अतिरिक्त स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी देवव्रत सरस्वती, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सुधानन्द जी, स्वामी विशुद्धानन्द जी, स्वामी सोमवेश जी, आचार्य विजयपाल जी झज्जर, स्वामी सोम्यानन्द जी मथुरा, स्वामी निर्भयानन्द जी हाथरस, स्वामी व्रतानन्द जी गुरुकुल आमसेना आदि प्रमुख आर्य संन्यासियों ने भाग लिया। उनके अतिरिक्त उड़ीसा तथा देश के अन्य प्रान्तों से संन्यासी एवं वानप्रस्थीगण सम्मेलन में सम्मिलित हुए। दो दिन तक चले इस विशेष विरक्त सम्मेलन में वैदिक धर्म प्रचार एवं धर्मान्तरण जैसी समस्याओं पर विचार किया गया। सभी संन्यासियों ने अपने अनुभवपूर्ण सुझाव सम्मेलन में प्रस्तुत किये और अन्त में निर्णय हुआ कि सर्वप्रथम उड़ीसा में धर्मरक्षा जनचेतना यात्रा निकाली जायेगी और लोगों को अपने धर्म के प्रति जागरूक किया जायेगा।

स्वामी धर्मानन्द जी ने अपनी वेदना प्रकट करते हुए धर्मान्तरण की समस्या को वर्तमान की ज्वलन्त समस्या बताया और उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हम सभी संन्यासियों को इस दिशा में रचनात्मक कार्य करना चाहिए। इस विरक्त सम्मेलन का संयोजन डॉ. कुंजदेव मनीषी एवं ब्र. मनुदेव ने किया तथा सम्पूर्ण व्यवस्था का दायित्व स्वामी व्रतानन्द जी, आचार्य गुरुकुल आमसेना एवं ब्र. कोमल आर्य ने संभाला। स्वामी धर्मानन्द जी ने सभी संन्यासियों एवं वानप्रस्थियों को पत्रम् पुष्पम् भेंट कर सम्मानित भी किया। सम्मेलन अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/– रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष – 011–23274771, 011–42415359, मो.:–9868211979, 8218863689

ई-मेल : ***sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in***

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : ***sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com*** वैबसाइट : ***www.vedicaryasamaj.com***

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।